وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَ تَعْمَلْ صَالِحًا

और जो तुम में से अल्लाह और उस के रसूल की इताअत और आमाले सालिहा करेगी

نُّؤْتِهَآ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾

तो हम उसे उस का अज्र दुगना देंगे और हम ने उस के लिए बाइज़्ज़त रिज़्क़ तय्यार कर रखा है।

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ

ऐ नबी की बीवियो! तुम दूसरी आम औरतों में से किसी एक की तरह नहीं हो अगर तुम मुत्तक़ी बन कर रहो,

فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ

तो बोलने में आवाज़ पस्त मत करो के कहीं लालच करने लगे वो शख़्स जिस के दिल में बीमारी हो

وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٣٢﴾ وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ

और बात वो करो जो भलाई वाली हो। और अपने घरों में ठेहरी रहो

وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ

और पेहली वाली जाहिलीयत के तर्ज़ पर बनाव सिंघार को खुला मत रेहने दो और नमाज़ क़ाइम करो

وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ

और ज़कात दो और अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करो। अल्लाह तो सिर्फ ये

اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ

चाहता है के तुम से गन्दगी को दूर रखे ऐ एहले बैत! और तुम्हें पाक

تَطْهِيْرًا ﴿٣٣﴾ وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ

साफ़ रखे। और याद करो उस को जो तिलावत किया जाता है तुम्हारे घरों में

ع ٧ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ﴿٣٤﴾

अल्लाह की आयात और हिक्मत में से। यक़ीनन अल्लाह बारीकबीन, बाखबर है।

اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ

यक़ीनन मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें और ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतें

وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ

और आजिज़ी करने वाले मर्द और आजिज़ी करने वाली औरतें और सच बोलने वाले मर्द और सच बोलने वाली औरतें

وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ

और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें और खुशूअ करने वाले मर्द और खुशूअ करने वाली औरतें

وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ
और सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औरतें और रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली औरतें

وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا
और जो मर्द अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करने वाले हैं और जो औरतें अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करने वाली हैं और जो मर्द अल्लाह को बहोत ज़्यादा याद करने वाले हैं

وَّالذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٣٥﴾
और जो औरतें अल्लाह को बहोत ज़्यादा याद करने वाली हैं। अल्लाह ने उन के लिए मग़फिरत और अज्रे अज़ीम तय्यार कर रखा है।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ
और किसी मोमिन मर्द और मोमिन औरत के लिए जाइज़ नहीं है के जब अल्लाह और उस का रसूल किसी मुआमले का

اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ
फ़ैसला कर दे तो उन के लिए अपने मुआमले में कुछ भी इखतियार हो। और जो अल्लाह और

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ﴿٣٦﴾ؕ
उस के रसूल की नाफरमानी करेगा तो वो खुली गुमराही में भटक गया।

وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْۤ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ
और जब आप फरमा रहे थे उस शख्स को के जिस पर अल्लाह ने इन्आम फरमाया और आप ने भी उस पर इन्आम फरमाया

عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ
के तू अपनी बीवी अपने पास रेहने दे और अल्लाह से डर हालांके आप अपने जी में छुपा रहे थे वो जिस को अल्लाह

مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰىهُ ؕ
ज़ाहिर करने वाला था और आप इन्सानों से डरते थे। और अल्लाह उस का ज़्यादा हक़दार है के आप उस से डरें।

فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ
फिर जब ज़ैद इब्ने हारिसा ने ज़ैनब से हाजत पूरी कर ली तो हम ने ज़ैनब आप के निकाह में दे दी, ताके ईमान

عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ حَرَجٌ فِيْۤ اَزْوَاجِ اَدْعِيَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا
वालों पर कोई हरज न रहे उन के मुंह बोले बेटों की बीवियों के बारे में जब वो उन से

مِنْهُنَّ وَطَرًا ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿٣٧﴾ مَا كَانَ
गर्ज़ पूरी कर लें। और अल्लाह के हुक्म को तो पूरा होना ही था। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर कोई

عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهٗ ؕ سُنَّةَ اللّٰهِ
तंगी नहीं उस में जो (खुद) अल्लाह ने उन के लिए मुक़द्दर कर दिया। अल्लाह का दस्तूर रहा है

فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ؕ وَ كَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا

उन (पैग़म्बरों) में भी जो पेहले गुज़र चुके हैं। और अल्लाह का अम्रे क़ज़ा व क़दर पूरा

مَّقْدُوْرَا ۙ﴿۳۸﴾ اِلَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ

हो कर ही रेहता है। पैग़म्बर वो लोग हैं जो अल्लाह के पैग़ामात पहोंचाते हैं

وَ يَخْشَوْنَهٗ وَلَا يَخْشَوْنَ اَحَدًا اِلَّا اللّٰهَ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ

और अल्लाह से डरते हैं और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते। और अल्लाह हिसाब लेने वाला

حَسِيْبًا ﴿۳۹﴾ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ

काफ़ी है। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम्हारे मर्दों में से किसी एक के बाप नहीं,

وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ

लेकिन वो अल्लाह के रसूल हैं और तमाम अम्बिया के ख़ातम हैं। और अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने

ع ۵

عَلِيْمًا ﴿۴۰﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا

वाले हैं। ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह की याद बहोत ज़्यादा

كَثِيْرًا ۙ﴿۴۱﴾ وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿۴۲﴾ هُوَ الَّذِيْ

किया करो। और उस की तस्बीह करो सुबह व शाम। वही अल्लाह है जो

يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ

तुम पर रहमत भेजता है और उस के फरिशते भी ताके अल्लाह तुम्हें अन्धेरों से नूर

اِلَى النُّوْرِ ؕ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ﴿۴۳﴾ تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ

की तरफ़ निकाले। और वो ईमान वालों पर बहोत शफक़त वाला है। उन का तहीया जिस दिन

يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ۚۖ وَّاَعَدَّ لَهُمْ اَجْرًا كَرِيْمًا ﴿۴۴﴾ يٰۤاَيُّهَا

वो उस से मिलेंगे सलाम होगा। और अल्लाह ने उन के लिए इज़्ज़त वाला सवाब तय्यार कर रखा है। ऐ

النَّبِيُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا ۙ﴿۴۵﴾

नबी! यक़ीनन हम ने आप को रसूल बना कर भेजा गवाही देने वाला और बशारत सुनाने वाला और डराने वाला।

وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ﴿۴۶﴾ وَبَشِّرِ

और अल्लाह की तरफ़ उस के हुक्म से दावत देने वाला और नूर फैलाने वाला चिराग़ बना कर भेजा है। और ईमान

الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا ﴿۴۷﴾ وَلَا

वालों को बशारत दीजिए इस बात की के उन के लिए अल्लाह की तरफ़ से बड़ा फ़ज़्ल है। और

تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَدَعْ اَذٰىهُمْ وَتَوَكَّلْ

काफ़िरों और मुनाफिक़ों का केहना न मानिए और उन की तरफ से जो तकलीफ पहोंचे उस की परवा न कीजिए और

عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿۴۸﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا

अल्लाह पर तवक्कुल कीजिए। और अल्लाह काफ़ी कारसाज़ है। ऐ ईमान वालो!

اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ

जब तुम निकाह करो ईमान वाली औरतों से, फिर तुम उन को तलाक़ दो इस से पेहले

اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ

के तुम उन को छुओ तो तुम्हारे लिए उन पर कोई इद्दत नहीं जिस को तुम शुमार करो।

فَمَتِّعُوْهُنَّ وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿۴۹﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ

तो तुम उन को कुछ मताअ दे दो और अच्छी तरह रुख़सत कर दो। ऐ नबी! हम ने

اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِيْۤ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ

आप के लिए आप की बीवियां हलाल की हैं जिन को आप महर दे चुके हैं और आप की ममलूका बांदियाँ भी जो अल्लाह

يَمِيْنُكَ مِمَّاۤ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ

ने आप को ग़नीमत में से दिलवाई हैं और हलाल की हैं आप के चचा की बेटियाँ और आप की फूफियों की बेटियाँ

وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ ۫

और आप के मामू की बेटियाँ, और आप की खालाओं की बेटियाँ, जिन्हों ने आप के साथ हिजरत की।

وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ

और वो मोमिन औरत जो अपनी ज़ात नबी को हिबा कर दे अगर नबी उन को निकाह

اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ۗ خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ

में लेना चाहें। ये सिर्फ आप ही के लिए है, न के आम मोमिनीन के लिए।

قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْۤ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ

यक़ीनन हमें मालूम है जो हम ने उन पर फ़र्ज़ किया है उन की बीवियों और उन की बांदियों के

اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا

बारे में ताके आप पर कुछ भी तंगी न रहे। और अल्लाह बहोत ज़्यादा बख़्शने वाला,

رَّحِيْمًا ﴿۵۰﴾ تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِيْۤ اِلَيْكَ مَنْ

निहायत रहम वाला है। आप दूर रखें जिसे चाहें उन में से और अपने पास रखें जिसे

تَشَآءُ ؕ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ؕ

चाहें। और जिस को आप चाहें उन में से जिन को आप ने अलग रखा था तो आप पर कोई गुनाह नहीं।

ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ

ये इस के ज़्यादा क़रीब है के उन की आँखें ठन्डी रहें और वो ग़मगीन न हों और वो सब खुश रहें

بِمَآ اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ

उस पर जो आप ने उन को दिया। और अल्लाह खूब जानता है उस को जो तुम्हारे दिलों में है।

وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ﴿٥١﴾ لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ مِنْۢ بَعْدُ

और आल्लाह इल्म वाले, हिल्म वाले हैं। आप के लिए इस के बाद औरतें हलाल नहीं

وَلَآ اَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ

और न ये के आप उन के बदले में और दूसरी बीवियाँ लाएं अगर्चे उन का हुस्न आप को अच्छा लगे,

اِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

मगर आप की ममलूका बाँदियाँ। और अल्लाह हर चीज़ पर

ع ٦ ١٢ ٣ رَّقِيْبًا ﴿٥٢﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ

निगरान है। ऐ ईमान वालो! दाखिल मत हो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के हुजरों

النَّبِيِّ اِلَّآ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ غَيْرَ نٰظِرِيْنَ

में मगर ये के तुम्हें खाने की तरफ इजाज़त दी जाए इस हाल में के तुम उस के पकने का इन्तिज़ार करने

اِنٰىهُ ۙ وَلٰكِنْ اِذَا دُعِيْتُمْ فَادْخُلُوْا فَاِذَا طَعِمْتُمْ

वाले न हो, लेकिन जब तुम्हें बुलाया जाए तब तुम दाखिल हो, फिर जब तुम खा चुको

فَانْتَشِرُوْا وَلَا مُسْتَاْنِسِيْنَ لِحَدِيْثٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ

तो मुन्तशिर हो जाओ और बातों में दिल लगा कर के मत बैठो। यक़ीनन ये चीज़ नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि

يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيٖ مِنْكُمْ ؗ وَاللّٰهُ لَا يَسْتَحْيٖ

वसल्लम) को ईज़ा पहोंचाती है, फिर वो तुम से हया करते हैं। और अल्लाह हक़ से हया

مِنَ الْحَقِّ ؕ وَاِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا فَسْـَٔلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ

नहीं करता। और जब उम्महातुल मोमिनीन से तुम्हें कोई चीज़ मांगनी हो, तो परदे के पीछे से उन से

حِجَابٍ ؕ ذٰلِكُمْ اَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ وَ قُلُوْبِهِنَّ ؕ وَمَا كَانَ

सवाल करो। ये चीज़ तुम्हारे दिलों के लिए और उन के दिलों के लिए ज़्यादा पाकीज़गी वाली है। और

لَكُمْ اَنْ تُؤْذُوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَلَاۤ اَنْ تَنْكِحُوْۤا اَزْوَاجَهٗ
तुम्हारे लिए जाइज़ नहीं है के तुम अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ईज़ा दो और जाइज़ नहीं है ये के तुम आप (सल्लल्लाहु

مِنْۢ بَعْدِهٖۤ اَبَدًا ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمًا ۝٥٣
अलैहि वसल्लम) की बीवियों से निकाह करो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद कभी भी। यक़ीनन ये अल्लाह के नज़दीक बड़ी चीज़ है।

اِنْ تُبْدُوْا شَيْـًٔا اَوْ تُخْفُوْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ
अगर तुम किसी चीज़ को ज़ाहिर करो या उस को छुपाओ तो यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले

عَلِيْمًا ۝٥٤ لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيْۤ اٰبَآئِهِنَّ وَلَاۤ اَبْنَآئِهِنَّ
हैं। औरतों पर कोई गुनाह नहीं (बेहिजाब आने में) उन के बाप दादा के बारे में और न उन के बेटों के बारे में

وَلَاۤ اِخْوَانِهِنَّ وَلَاۤ اَبْنَآءِ اِخْوَانِهِنَّ وَلَاۤ اَبْنَآءِ
और न उन के भाइयों के बारे में और न उन के भाइयों के बेटों के बारे में और न उन की बेहनों के बेटों के

اَخَوٰتِهِنَّ وَلَا نِسَآئِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ ۚ
बारे में और न उन की (मेल जोल की) औरतों के बारे में और न उन के बारे में जिन के उन के हाथ मालिक हैं।

وَاتَّقِيْنَ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ۝٥٥
और तुम अल्लाह से डरो। यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ को देख रहे हैं।

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ
यक़ीनन अल्लाह और उस के फरिशते रहमत भेजते हैं नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर। ऐ ईमान

اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝٥٦ اِنَّ الَّذِيْنَ
वालो! तुम भी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर दुरूद और सलाम कस्रत से पढ़ो। यक़ीनन वो लोग

يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا
जो अल्लाह और उस के रसूल को ईज़ा पहोंचाते हैं अल्लाह ने उन पर दुन्या और आखिरत में लानत

وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝٥٧ وَالَّذِيْنَ
की है और उन के लिए रुस्वा करने वाला अज़ाब तय्यार कर रखा है। और जो लोग

يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا
ईज़ा पहोंचाते है ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को इस के बग़ैर के उन्हों ने कुसूर किया हो,

فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ۝٥٨ ع يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ ع ٨ ٤
तो यक़ीनन उन्हों ने बुहतान और खुले गुनाह का बोझ उठाया। ऐ नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आप अपनी अज़्वाजे

لِّاَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ

मुतह्हरात से और अपनी बेटियों और मोमिनीन की औरतों से फरमा दीजिए के वो अपने चेहरे पर अपनी चादर का

مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ؕ

कुछ हिस्सा लटकाए रखें। ये इस के ज़्यादा क़रीब है के उन्हें पेहचान लिया जाए, फिर उन्हें ईज़ा न दी जाए।

وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝٥٩ لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنٰفِقُوْنَ

और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। अगर मुनाफिक़ मर्द और वो लोग

وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْمُرْجِفُوْنَ فِي الْمَدِيْنَةِ

जिन के दिलों में बीमारी है और वो लोग जो मदीना मुनव्वरा में अफवाहें फैलाने वाले हैं बाज़ नहीं आएंगे

معانقة ١٢ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُوْنَكَ فِيْهَاۤ اِلَّا قَلِيْلًا ۝٦٠ۛ

तो हम आप को उन के खिलाफ भड़का देंगे, फिर वो मदीना मुनव्वरा में आप के पड़ोसी बन कर ठेहेर नहीं सकेंगे मगर थोड़ा।

مَّلْعُوْنِيْنَ ۛۚ اَيْنَمَا ثُقِفُوْۤا اُخِذُوْا وَقُتِّلُوْا تَقْتِيْلًا ۝٦١

उन पर फिटकार हो। जहाँ कहीं मिलेंगे, पकड़ लिए जाएंगे और उन्हें एक एक कर के क़त्ल कर दिया जाएगा।

سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ

अल्लाह का दस्तूर रहा है उन के बारे में जो पेहले गुज़र चुके हैं। और अल्लाह की सुन्नत में आप कोई तबदीली

الربع اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۝٦٢ يَسْئَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ؕ قُلْ

हरगिज़ नहीं पाएंगे। ये लोग आप से क़यामत के बारे में सवाल करते है। आप फ़रमा दीजिए के

اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُوْنُ

उस का इल्म तो सिर्फ अल्लाह के पास है। और आप को मालूम नहीं के शायद क़यामत क़रीब

قَرِيْبًا ۝٦٣ اِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ الْكٰفِرِيْنَ وَاَعَدَّ لَهُمْ سَعِيْرًا ۝٦٤ۙ

ही हो। यक़ीनन अल्लाह ने काफिरों पर लानत फरमाई है और उन के लिए देहेकती आग तय्यार कर रखी है।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ۚ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ۝٦٥ۚ

जिस में वो हमेशा रहेंगे। वो कोई मददगार और दोस्त नहीं पाएंगे।

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَاۤ اَطَعْنَا

जिस दिन उन के चेहरे आग में उलट पलट किए जाएंगे, वो कहेंगे ऐ काश के हम अल्लाह की इताअत

اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ۝٦٦ وَقَالُوْا رَبَّنَاۤ اِنَّاۤ اَطَعْنَا سَادَتَنَا

करते और हम रसूल की इताअत करते। और वो कहेंगे ऐ हमारे रब! हम ने अपने सरदारों और

وَ كُبَرَآءَنَا فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا ﴿٦٧﴾ رَبَّنَآ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ

अपने बड़ों की इताअत की, तो उन्हों ने हमें गुमराह किया रास्ते से। ऐ हमारे रब! तू उन्हें दुगना

مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيْرًا ﴿٦٨﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

अज़ाब दे और तू उन पर बड़ी लानत फ़रमा। ऐ ईमान वालो! तुम

اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ

उन जैसे मत बनो जिन्हों ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को ईज़ा दी, फिर अल्लाह ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को बरी फ़रमा

مِمَّا قَالُوْا ؕ وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ﴿٦٩﴾ يٰۤاَيُّهَا

दिया उस से जो उन्हों ने कहा। और मूसा (अलैहिस्सलाम) अल्लाह के नज़दीक वजाहत वाले थे। ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ قُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿٧٠﴾

ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सीधी बात कहो।

يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ

वो तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल की इस्लाह कर देगा और तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाह बख्श देगा।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧١﴾

और जो अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करेगा तो यक़ीनन वो भारी कामयाबी से कामयाब हो गया।

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

यक़ीनन हम ने अमानत पेश की आसमानों और ज़मीन

وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا

और पहाड़ों पर, तो उन सब ने इन्कार किया उस के उठाने से और वो डरे उस से

وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ﴿٧٢﴾

और उस को इन्सान ने उठा लिया। यक़ीनन वो बड़ा ज़ालिम और बड़ा जाहिल है।

لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ

ताके अल्लाह अज़ाब दे मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुशरिक मर्दों और मुशरिक औरतों को

وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ

और अल्लाह ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों की तौबा क़बूल करे।

وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٣﴾

और अल्लाह बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

اٰيَاتُهَا ۵۴ (٣٤) سُوۡرَةُ سَبَاٍ مَّكِّيَّةٌ (۵۸) رُكُوۡعَاتُهَا ٦

उस में ५४ आयतें हैं सूरह सबा मक्का में नाज़िल हुई और ६ रुकूअ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ الَّذِىۡ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ وَلَهُ

तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं

الۡحَمۡدُ فِى الۡاٰخِرَةِ ؕ وَهُوَ الۡحَكِيۡمُ الۡخَبِيۡرُ ۝١ يَعۡلَمُ مَا يَلِجُ

और उस के लिए तमाम तारीफें हैं आखिरत में। और वो हिक्मत वाला, बाखबर है। वो जानता है उन चीज़ों को जो

فِى الۡاَرۡضِ وَمَا يَخۡرُجُ مِنۡهَا وَمَا يَنۡزِلُ مِنَ السَّمَآءِ

ज़मीन में दाख़िल होती हैं और जो ज़मीन से निकलती हैं और जो आसमान से उतरती हैं

وَمَا يَعۡرُجُ فِيۡهَا ؕ وَهُوَ الرَّحِيۡمُ الۡغَفُوۡرُ ۝٢ وَقَالَ الَّذِيۡنَ

और जो आसमान में चढ़ती हैं। और वो निहायत रहम वाला, बख्शने वाला है। और काफिर लोग केहते

كَفَرُوۡا لَا تَاۡتِيۡنَا السَّاعَةُ ؕ قُلۡ بَلٰى وَرَبِّىۡ لَتَاۡتِيَنَّكُمۡ ۙ

हैं हम पर क़यामत नहीं आएगी। आप फरमा दीजिए, क्यूं नहीं? मेरे रब की क़सम जो ग़ैब का इल्म रखता है

عٰلِمِ الۡغَيۡبِ ۚ لَا يَعۡزُبُ عَنۡهُ مِثۡقَالُ ذَرَّةٍ فِى السَّمٰوٰتِ

वो तुम पर ज़रूर आएगी। उस से ज़र्रा बराबर कोई चीज़ मखफी नहीं आसमानों में और न ज़मीन में

وَلَا فِى الۡاَرۡضِ وَلَاۤ اَصۡغَرُ مِنۡ ذٰلِكَ وَلَاۤ اَكۡبَرُ

और न उस से छोटी कोई चीज़ और न उस से बड़ी कोई चीज़ मगर वो साफ़ साफ़ बयान करने वाली

اِلَّا فِىۡ كِتٰبٍ مُّبِيۡنٍ ۝٣ لِّيَجۡزِىَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ

किताब (लौहे महफूज़) में है। ताके अल्लाह बदला दे उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे।

اُولٰٓئِكَ لَهُمۡ مَّغۡفِرَةٌ وَّرِزۡقٌ كَرِيۡمٌ ۝٤ وَالَّذِيۡنَ سَعَوۡ

उन के लिए मग़फिरत है और इज़्ज़त वाली रोज़ी है। और जो लोग हमारी आयतों में

فِىۡۤ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيۡنَ اُولٰٓئِكَ لَهُمۡ عَذَابٌ مِّنۡ رِّجۡزٍ اَلِيۡمٌ ۝٥

कोशिश करते हैं हराने वाले बन कर उन के लिए बला का दर्दनाक अज़ाब होगा।

وَيَرَى الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ الَّذِىۡۤ اُنۡزِلَ اِلَيۡكَ

और वो लोग जिन को इल्म दिया गया वो समझ रहे हैं के वो कुरआन जो आप की तरफ़ आप के रब की तरफ से

مِنۡ رَّبِّكَ هُوَ الۡحَقَّ ۙ وَ يَهۡدِىۡۤ اِلٰى صِرَاطِ الۡعَزِيۡزِ
उतारा गया, वो हक़ है। और ये कुरआन ज़बर्दस्त काबिले तारीफ अल्लाह के रास्ते की तरफ रहनुमाई

الۡحَمِيۡدِ ۝۶ وَقَالَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا هَلۡ نَدُلُّكُمۡ عَلٰى رَجُلٍ
करता है। और काफिर केहते हैं क्या हम तुम्हें पता बतलाएं ऐसे शख़्स का जो

يُّنَبِّئُكُمۡ اِذَا مُزِّقۡتُمۡ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمۡ لَفِىۡ
तुम्हें खबर देता है के जब तुम पूरे तौर पर टुकड़े टुकड़े (रेज़ा रेज़ा) कर दिए जाओगे तब तुम नए सिरे

خَلۡقٍ جَدِيۡدٍ ۝۷ اَفۡتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَمۡ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ
से ज़िन्दा किए जाओगे? या तो उस ने अल्लाह पर झूठ घड़ा है या उसे जुनून है।

بَلِ الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡاٰخِرَةِ فِى الۡعَذَابِ وَالضَّلٰلِ
बल्के वो लोग जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते वो अज़ाब में और दूर वाली गुमराही

الۡبَعِيۡدِ ۝۸ اَفَلَمۡ يَرَوۡا اِلٰى مَا بَيۡنَ اَيۡدِيۡهِمۡ وَمَا خَلۡفَهُمۡ
में हैं। क्या उन्हों ने देखा नहीं उन चीज़ों को जो उन के आगे और उन के पीछे हैं

مِّنَ السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ ؕ اِنۡ نَّشَاۡ نَخۡسِفۡ بِهِمُ الۡاَرۡضَ
आसमान और ज़मीन! अगर हम चाहें तो हम उन्हें ज़मीन में धंसा दें

اَوۡ نُسۡقِطۡ عَلَيۡهِمۡ كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ
या हम उन पर आसमान से टुकड़े गिरा दें। यक़ीनन उस में अलबत्ता

لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبۡدٍ مُّنِيۡبٍ ۝۹ وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا دَاوٗدَ ع
निशानी है हर तौबा करने वाले बन्दे के लिए। हम ने दावूद (अलैहिस्सलाम) को हमारी तरफ़ से फ़ज़्ल (नुबूव्वत व

مِنَّا فَضۡلًا ؕ يٰجِبَالُ اَوِّبِىۡ مَعَهٗ وَالطَّيۡرَ ۚ وَاَلَنَّا لَهُ
हुकूमत) दिया। (हम ने कहा) ऐ पहाड़ो! तुम उन के साथ तस्बीह करो और परिन्दों को भी हुक्म दिया। और हम ने उन के लिए

الۡحَدِيۡدَ ۝۱۰ اَنِ اعۡمَلۡ سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرۡ فِى السَّرۡدِ وَاعۡمَلُوۡا
लोहे को नर्म किया। के आप चौड़ी ज़िरहें बनाइए और मेख़ें लगाने में मिक़दार मुतअय्यन रखिए और तुम सब नेक अमल

صَالِحًا ؕ اِنِّىۡ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ بَصِيۡرٌ ۝۱۱ وَلِسُلَيۡمٰنَ الرِّيۡحَ
करते रहो। यक़ीनन मैं तुम्हारे कामों को देख रहा हूँ। और सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के लिए हवा को ताबेअ किया, हवा का सुबह के

غُدُوُّهَا شَهۡرٌ وَّرَوَاحُهَا شَهۡرٌ ۚ وَاَسَلۡنَا لَهٗ عَيۡنَ
वक़्त का सफर एक महीने की मसाफ़त और उस का शाम के वक़्त का सफ़र एक महीने की मसाफत तै करता था। और हम ने

الۡقِطۡرِ ؕ وَمِنَ الۡجِنِّ مَنۡ يَّعۡمَلُ بَيۡنَ يَدَيۡهِ بِاِذۡنِ رَبِّهٖ ؕ
उन के लिए तांबे का चशमा बहाया। और जिन्नात में से वो भी थे जो उन के सामने उन के रब के हुक्म से काम करते थे।

وَمَنۡ يَّزِغۡ مِنۡهُمۡ عَنۡ اَمۡرِنَا نُذِقۡهُ مِنۡ عَذَابِ السَّعِيۡرِ ﴿١٢﴾
और उन में से जो हमारे हुक्म से टेढ़ा चलेगा तो हम उसे देहेकती आग का अज़ाब चखाएंगे।

يَعۡمَلُوۡنَ لَهٗ مَا يَشَآءُ مِنۡ مَّحَارِيۡبَ وَ تَمَاثِيۡلَ وَجِفَانٍ
वो सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के लिए बनाते थे वो चीज़ें जो सुलैमान (अलैहिस्सलाम) चाहते, यअनी क़िलअे और मूर्तियाँ और तालाब

كَالۡجَوَابِ وَقُدُوۡرٍ رّٰسِيٰتٍ ؕ اِعۡمَلُوۡۤا اٰلَ دَاوٗدَ شُكۡرًا ؕ
जैसे लगन और एक ही जगह साबित रेहने वाली ऊँची ऊँची देगें। ऐ आले दावूद! शुक्रिये के तौर पर अमल करो।

وَقَلِيۡلٌ مِّنۡ عِبَادِىَ الشَّكُوۡرُ ﴿١٣﴾ فَلَمَّا قَضَيۡنَا عَلَيۡهِ
और मेरे बन्दों में से कम शुक्रगुज़ार हैं। फिर जब हम ने उन की मौत का फैसला कर दिया

الۡمَوۡتَ مَا دَلَّهُمۡ عَلٰى مَوۡتِهٖۤ اِلَّا دَآبَّةُ الۡاَرۡضِ تَاۡكُلُ
तो जिन्नात को सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की मौत का पता नहीं बतलाया मगर ज़मीन के कीड़े (घुन) ने जो आप की

مِنۡسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الۡجِنُّ اَنۡ لَّوۡ كَانُوۡا يَعۡلَمُوۡنَ
लाठी को खा रहा था। फिर जब सुलैमान (अलैहिस्सलाम) गिर पड़े, तब जिन्नात ने जाना के अगर वो (जिन) ग़ैब

الۡغَيۡبَ مَا لَبِثُوۡا فِى الۡعَذَابِ الۡمُهِيۡنِ ﴿١٤﴾ؕ لَقَدۡ كَانَ
जानते होते तो वो रुस्वा करने वाले अज़ाब में न रेहते। तहक़ीक़ के कौमे सबा के लिए

لِسَبَاٍ فِىۡ مَسۡكَنِهِمۡ اٰيَةٌ ۚ جَنَّتٰنِ عَنۡ يَّمِيۡنٍ وَّشِمَالٍ ۬ؕ
उन के वतन में निशानी थी। दो बाग़ात थे दाएं और बाएं।

كُلُوۡا مِنۡ رِّزۡقِ رَبِّكُمۡ وَاشۡكُرُوۡا لَهٗ ؕ بَلۡدَةٌ طَيِّبَةٌ
तो तुम खाओ अपने रब की रोज़ी में से और उस का शुक्र अदा करो। शेहर भी उम्दा

وَّ رَبٌّ غَفُوۡرٌ ﴿١٥﴾ فَاَعۡرَضُوۡا فَاَرۡسَلۡنَا عَلَيۡهِمۡ سَيۡلَ الۡعَرِمِ
और रब भी बख्शने वाला। फिर उन्हों ने ऐराज़ किया, तो हम ने उन पर बन्द का सैलाब छोड़ दिया,

وَبَدَّلۡنٰهُمۡ بِجَنَّتَيۡهِمۡ جَنَّتَيۡنِ ذَوَاتَىۡ اُكُلٍ خَمۡطٍ وَّاَثۡلٍ
और हम ने उन को उन दो बाग़ के इवज़ बदमज़ा फल वाले दूसरे दो बाग़ दिए और झाव के दरख्त

وَّشَىۡءٍ مِّنۡ سِدۡرٍ قَلِيۡلٍ ﴿١٦﴾ ذٰلِكَ جَزَيۡنٰهُمۡ بِمَا كَفَرُوۡا ؕ
और थोड़ी सी बेरी के दरख्त। हम ने उन्हें उन के कुफ्र की वजह से ये सज़ा दी।

وَهَلْ نُجٰزِيْٓ اِلَّا الْكَفُوْرَ ﴿١٧﴾ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ
और हम सज़ा नहीं देते मगर नाशुकरी करने वाले को। और हम ने एहले सबा और उन बस्तियों के दरमियान

الْقُرَى الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَّقَدَّرْنَا فِيْهَا
जिन में हम ने बरकतें रखी थीं ऐसी बस्तियाँ बना दी थीं जो नज़र आती थीं, और हम ने उन में सफर की

السَّيْرَ ۭ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِيَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ﴿١٨﴾ فَقَالُوْا
मन्ज़िलें मुतअय्यन कर दी थीं। के तुम उन में रात में और दिन में अमन से चलो। तो उन्हों ने कहा

رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ
ऐ हमारे रब! हमारे सफरों के दरमियान दूरी कर दे और उन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया, फिर हम ने उन्हें कहानियाँ

اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
बना दिया और हम ने उन्हें मुकम्मल तौर पर टुकड़े टुकड़े कर दिया। बेशक उस में अलबत्ता निशानियाँ हैं

لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿١٩﴾ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ
हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए। यक़ीनन उन पर इबलीस ने अपना गुमान सच कर

ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَمَا كَانَ
दिखाया, फिर वो इबलीस के पीछे चले सिवाए ईमान वालों के गिरोह के। और इबलीस का

لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ
ईमान वालों पर जो तसल्लुत है, सिर्फ इस लिए है ताके हम मालूम करें के कौन आखिरत पर ईमान रखता है,

مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ ۭ وَرَبُّكَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿٢١﴾ ع ٢/٨
उस से जो उस की तरफ से शक में है। और आप का रब हर चीज़ पर निगराँ है।

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ
आप फ़रमा दीजिए के तुम पुकारो उन को जिन का तुम गुमान करते हो अल्लाह के सिवा। वो न आसमान

مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ
में ज़र्रा बराबर के मालिक हैं और न ज़मीन में, और न उन की आसमान और ज़मीन

فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ﴿٢٢﴾ وَلَا تَنْفَعُ
(के बनाने) में कोई शिरकत है और उन में से कोई अल्लाह का मददगार नहीं। और सिफारिश अल्लाह के

الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ۭ حَتّٰٓي اِذَا فُزِّعَ عَنْ
नज़दीक नफा नहीं देगी मगर उसी की जिस को अल्लाह इजाज़त दे। यहाँ तक के जब उन के दिलों से घबराहट

قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا ۙ قَالَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ

दूर हो जाती है तो पूछते हैं के तुम्हारे रब ने क्या कहा? वो केहते हैं के हक़ बात कही। और वो बरतर है,

الْكَبِيْرُ ﴿٢٣﴾ قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

बड़ा है। आप पूछिए कौन तुम्हें रोज़ी देता है आसमानों से और ज़मीन से?

قُلِ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّآ اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٤﴾

आप ही फ़रमा दीजिए अल्लाह। और हम या तुम ज़रूर या हिदायत पर हैं या खुली गुमराही में हैं। आप फरमा

قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّآ اَجْرَمْنَا وَلَا نُسْـَٔلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٥﴾

दीजिए के तुम से हमारे जराइम का सवाल नहीं होगा और तुम्हारे आमाल के मुतअल्लिक़ हम से नहीं पूछा जाएगा।

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ؕ وَهُوَ الْفَتَّاحُ

आप फ़रमा दीजिए के हमारा रब हमें इकट्ठा करेगा,फिर हमारे दरमियान हक़ को खोल देगा। और वो बहोत ज़्यादा खोलने वाला है,

الْعَلِيْمُ ﴿٢٦﴾ قُلْ اَرُوْنِيَ الَّذِيْنَ اَلْحَقْتُمْ بِهٖ شُرَكَآءَ كَلَّا ؕ

खूब जानने वाला है। आप फरमा दीजिए के तुम मुझे दिखाओ जिन को तुम अल्लाह के साथ शरीक ठेहरा कर मिलाते हो।

بَلْ هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٧﴾ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً

हरगिज़ नहीं। बल्के वो अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। और हम ने आप को तमाम इन्सानों के लिए बशारत

لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾

देने वाला और डराने वाला रसूल बना कर भेजा है, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾

और ये केहते हैं के ये वादा कब है अगर तुम सच्चे हो।

قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ عَنْهُ سَاعَةً

आप फरमा दीजिए के तुम्हारे लिए एक दिन का वादा है जिस से न एक घड़ी तुम पीछे रेह सकते हो और न एक घड़ी

النصف ع ٩ ٩ ٣ وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٠﴾ ۧ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا

आगे जा सकते हो। और काफिरों ने कहा के हम हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे इस

الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ

कुरआन पर और उन किताबों पर जो इस से पेहले थीं। और काश के आप देखें जब के ज़ालिम

مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖۚ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ

खड़े किए जाएंगे अपने रब के सामने। उन में से एक दूसरे की तरफ बात को डाल

الْقَوْلَ ۚ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا

रहा होगा। कमज़ोर लोग कहेंगे उन से जो बड़े बन कर रहे

لَوْلَآ اَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا

के अगर तुम न होते तो हम ईमान वाले होते। जो बड़े बन कर रहे वो कमज़ोरों

لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْٓا اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى

से कहेंगे क्या हम ने तुम्हें हिदायत से रोका था

بَعْدَ اِذْ جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ

इस के बाद के वो तुम्हारे पास आई? बल्के तुम ही मुजरिम थे। और कमज़ोर लोग

اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ

कहेंगे उन से जो बड़े बन कर रहे बल्के रात और दिन के मक्र (ने रोका),

اِذْ تَاْمُرُوْنَنَآ اَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَ نَجْعَلَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ؕ

जब तुम हमें हुक्म देते थे इस का के हम अल्लाह के साथ कुफ़्र करें और हम उस के लिए शरीक ठेहराएं।

وَ اَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ؕ وَجَعَلْنَا الْاَغْلٰلَ

और वो नदामत को छुपाएंगे जब वो अज़ाब देखेंगे। और हम तौक़ रख देंगे

فِيْٓ اَعْنَاقِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا

काफिरों की गरदनों में। उन्हें सज़ा नहीं दी जाएगी मगर उन्हीं कामों की जो वो

يَعْمَلُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ

करते थे। और हम ने किसी बस्ती में डराने वाला रसूल नहीं भेजा मगर वहाँ के खुशहाल

مُتْرَفُوْهَآ اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَقَالُوْا نَحْنُ

लोगों ने कहा के यक़ीनन हम तो कुफ़्र करते हैं उस के साथ जिस को दे कर तुम भेजे गए हो। और कहा के हम

اَكْثَرُ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۙ وَّمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٣٥﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ

ज़्यादा माल और औलाद वाले हैं। और हमें अज़ाब नहीं होगा। आप फ़रमा दीजिए यक़ीनन मेरा रब

يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ

रोज़ी कुशादा करता है जिस के लिए चाहता है और तंग करता है जिस के लिए चाहता है, लेकिन अक्सर लोग

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَمَآ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِيْ ع

जानते नहीं। और तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद ऐसी चीज़ नहीं जो तुम्हें हमारा ज़्यादा

تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰٓى اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ
मुक़र्रब बना दें, मगर जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, तो उन के

لَهُمْ جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِى الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾
लिए उन के अमल की दुगनी जज़ा होगी और वो बालाखानों में अमन से होंगे।

وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ فِى الْعَذَابِ
और जो कोशिश कर रहे हैं हमारी आयतों में हराने वाले बन कर, ये लोग अज़ाब में हाज़िर

مُحْضَرُوْنَ ﴿٣٨﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ
किए जाएंगे। आप फरमा दीजिए यक़ीनन मेरा रब रोज़ी कुशादा करता है जिस के लिए चाहता है

مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ؕ وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ
अपने बन्दों में से और तंग करता है जिस के लिए चाहता है। और जो चीज़ भी तुम खर्च करो तो वो

يُخْلِفُهٗ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا
उस का बदल देता है। और वो बेहतरीन रोज़ी देने वाला है। और जिस दिन वो सब को इकट्ठा करेगा,

ثُمَّ يَقُوْلُ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اَهٰٓؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٤٠﴾
फिर फरिशतों से कहेगा क्या ये लोग तुम्हारी इबादत किया करते थे?

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا
तो वो कहेंगे के आप पाक हैं, आप हमारे कारसाज़ हैं न के वो। बल्के ये लोग

يَعْبُدُوْنَ الْجِنَّ ۚ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾ فَالْيَوْمَ
तो जिन्नात की इबादत करते थे। उन में से अक्सर जिन्नात पर ईमान भी रखते थे। तो आज

لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ وَنَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ
तुम में से एक दूसरे के लिए नफ़ा और ज़रर के मालिक नहीं। और हम कहेंगे ज़ालिमों

ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿٤٢﴾
से के तुम उस आग का अज़ाब चखो जिस को तुम झुठलाया करते थे।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا رَجُلٌ
और जब उन पर हमारी साफ साफ आयतें तिलावत की जाती हैं, तो वो केहते हैं के ये पैग़म्बर नहीं है मगर एक आदमी

يُّرِيْدُ اَنْ يَّصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُكُمْ ۚ وَقَالُوْا
जो चाहता है के तुम्हें रोक दे उन माबूदों से जिन की तुम्हारे बाप दादा इबादत करते थे। और ये केहते हैं

مَا هٰذَآ اِلَّآ اِفْكٌ مُّفْتَرًى ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ
के ये कुरआन नहीं है मगर झूठ जो घड़ लिया गया है। और काफिर लोग हक़ के मुतअल्लिक़ केहते हैं जब हक़

لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٣﴾ وَمَآ اٰتَيْنٰهُمْ
उन के पास आया के ये तो महज़ साफ जादू है। और हम ने उन्हें

مِّنْ كُتُبٍ يَّدْرُسُوْنَهَا وَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ قَبْلَكَ
किताबें नहीं दीं जिन को वो पढ़ें और हम ने उन की तरफ़ आप से पेहले कोई डराने वाला रसूल

مِنْ نَّذِيْرٍ ﴿٤٤﴾ وَكَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَمَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ
नहीं भेजा। और उन लोगों ने भी झुठलाया जो उन से पेहले थे। और ये उन के दसवें हिस्से को भी नहीं पहोंचे

مَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٥﴾ قُلْ ع
जो हम ने अगलों को दिया था, फिर उन्हों ने मेरे पैग़म्बरों को झुठलाया। फिर मेरा अज़ाब कैसा था? आप फरमा

اِنَّمَآ اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰى وَ فُرَادٰى
दीजिए मैं तुम्हें सिर्फ एक चीज़ की नसीहत करता हूँ। ये के तुम खड़े हो जाओ अल्लाह के लिए दो दो और तन्हा तन्हा,

ثُمَّ تَتَفَكَّرُوْا ۫ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ لَّكُمْ
फिर तुम सोचो के तुम्हारे साथी (नबी) को कुछ जुनून नहीं है। वो तो सिर्फ तुम्हारे लिए एक सख्त

بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ﴿٤٦﴾ قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ
अज़ाब से पेहले डराने वाला है। आप फ़रमा दीजिए मैं ने जो अज्र तुम से मांगा हो

فَهُوَ لَكُمْ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
वो भी तुम्हारे लिए है। मेरा अज्र तो सिर्फ अल्लाह के ज़िम्मे है। और वो हर चीज़ पर

شَهِيْدٌ ﴿٤٧﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿٤٨﴾
निगराँ है। आप फरमा दीजिए के मेरा रब हक़ को डालता है। वो छुपी हुई चीज़ें खूब जानता है।

قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيْدُ ﴿٤٩﴾ قُلْ
आप फरमा दीजिए के हक़ आ गया और बातिल न पेहले कुछ कर सकता था और न दोबारा कुछ कर सकेगा। आप

اِنْ ضَلَلْتُ فَاِنَّمَآ اَضِلُّ عَلٰى نَفْسِيْ ۚ وَاِنِ اهْتَدَيْتُ
फ़रमा दीजिए अगर मैं गुमराही पर हूँ तो मेरी ज़ात ही पर मेरी गुमराही है। और अगर मैं हिदायत पर हूँ

فَبِمَا يُوْحِيْٓ اِلَيَّ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ ﴿٥٠﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ فَزِعُوْا
तो उस की वजह से है जो मेरी तरफ़ मेरा रब वही कर रहा है। यक़ीनन वो सुनने वाला, क़रीब है। और काश आप देखते

فَلَا فَوۡتَ وَاُخِذُوۡا مِنۡ مَّكَانٍ قَرِيۡبٍ ۙ﴿٥١﴾ وَّقَالُوۡۤا اٰمَنَّا

जब ये घबराएंगे तो फिर छूट नहीं सकेंगे और क़रीबी जगह से पकड़ लिए जाएंगे। और कहेंगे के हम कुरआन पर

بِهٖ ۚ وَاَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنۡ مَّكَانٍۢ بَعِيۡدٍ ۖۚ﴿٥٢﴾

ईमान ले आए। और उन के हाथ (ईमान तक) दूर जगह से कहाँ पहोंच सकते हैं?

وَّقَدۡ كَفَرُوۡا بِهٖ مِنۡ قَبۡلُ ۚ وَيَقۡذِفُوۡنَ بِالۡغَيۡبِ مِنۡ مَّكَانٍۢ

हालांके वो उस के साथ इस से पेहले कुफ़्र करते रहे। और वो बेतहक़ीक़ बातें दूर ही दूर से

بَعِيۡدٍ ﴿٥٣﴾ وَحِيۡلَ بَيۡنَهُمۡ وَبَيۡنَ مَا يَشۡتَهُوۡنَ كَمَا فُعِلَ

हांका करते थे। और उन के दरमियान और उन की ख्वाहिशात के दरमियान आड़ कर दी जाएगी जैसा के उन

ع ٦ ١٢ بِاَشۡيَاعِهِمۡ مِّنۡ قَبۡلُ ؕ اِنَّهُمۡ كَانُوۡا فِىۡ شَكٍّ مُّرِيۡبٍ ﴿٥٤﴾

के हममस्लकों के साथ इस से पेहले किया गया। बेशक वो बड़े भारी शक में थे।

اٰيَاتُهَا ٤٥ (٣٥) سُوۡرَةُ فَاطِرٍ مَّكِّيَّةٌ (٤٣) رُكُوۡعَاتُهَا ٥

उस में ४५ आयतें हैं — सूरह फातिर मक्का में नाज़िल हुई — और ५ रूकूअ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ جَاعِلِ الۡمَلٰٓـئِكَةِ

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाला है और फरिश्तों को पैग़ाम पहोंचाने वाला

رُسُلًا اُولِىۡۤ اَجۡنِحَةٍ مَّثۡنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ؕ يَزِيۡدُ فِى الۡخَلۡقِ

बना कर भेजने वाला है जो फरिश्ते दो दो और तीन तीन और चार चार पर वाले होते हैं। पैदाइश में ज़्यादती करता है

مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿١﴾ مَا يَفۡتَحِ اللّٰهُ

जितनी चाहता है। यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। अल्लाह इन्सानों के

لِلنَّاسِ مِنۡ رَّحۡمَةٍ فَلَا مُمۡسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمۡسِكۡ ۙ

लिए रहमत खोल दे तो उसे कोई रोक नहीं सकता। और जो रोक दे

فَلَا مُرۡسِلَ لَهٗ مِنۡۢ بَعۡدِهٖ ؕ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ﴿٢﴾

तो अल्लाह के बाद उस को कोई भेज नहीं सकता। और वो ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اذۡكُرُوۡا نِعۡمَتَ اللّٰهِ عَلَيۡكُمۡ ؕ هَلۡ مِنۡ

ऐ इन्सानो! याद करो अल्लाह की उस नेअमत को जो तुम पर है। क्या अल्लाह के सिवा

خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ لَآ اِلٰهَ
कोई पैदा करने वाला है जो तुम्हें आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता हो? कोई माबूद नहीं

اِلَّا هُوَ ۖ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝۳ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ
मगर वही। फिर तुम कहाँ उलटे फिरे जा रहे हो? और अगर ये आप को झुठलाएं

فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝۴
तो आप से पेहले पैग़म्बरों को झुठलाया गया। और अल्लाह ही की तरफ़ तमाम उमूर लौटाए जाएंगे।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ
ऐ इन्सानो! यक़ीनन अल्लाह का वादा सच्चा है, फिर तुम्हें दुन्यवी ज़िन्दगी धोके में

الدُّنْيَا ٚ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝۵ اِنَّ الشَّيْطٰنَ
न डाले। और तुम्हें अल्लाह से धोकेबाज़ (शैतान) धोके में न डाले। यक़ीनन शैतान

لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ؕ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا
तुम्हारा दुशमन है, तो तुम उसे दुशमन समझते रहो। वो अपनी जमाअत को बुलाता है ताके वो

مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝۶ اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ
दोज़खियों में से हो जाएं। वो जिन्हों ने कुफ़्र किया उन के लिए सख्त

شَدِيْدٌ ۬ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ
अज़ाब है। और जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे उन के लिए मग़फिरत है और बड़ा अज्र

وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝۷ اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ؕ ع
है। क्या फिर वो शख्स जिस के लिए उस की बदअमली मुज़य्यन की गई, फिर वो उस को अच्छा समझता है (ये और मोमिन जो उसे बुरा

فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۖ
समझता है दोनों बराबर हो सकते हैं?) तो यक़ीनन अल्लाह गुमराह करते हैं जिसे चाहते हैं और हिदायत देते हैं जिसे चाहते हैं।

فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ
फिर उन पर अफसोस के बाइस आप की जान न निकल जाए। बेशक अल्लाह को मालूम है

بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝۸ وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ
जो हरकतें ये कर रहे हैं। और अल्लाह वो है जिस ने हवाओं को भेजा, फिर वो बादलों को

سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ
उड़ाती हैं, फिर हम उस को हांक कर ले जाते हैं खुश्क ज़मीन की तरफ, फिर हम उस से ज़मीन को ज़िन्दा करते हैं

بَعۡدَ مَوۡتِهَا ؕ كَذٰلِكَ النُّشُوۡرُ ۝٩ مَنۡ كَانَ يُرِيۡدُ

उस के खुश्क हो जाने के बाद। इसी तरह क़ब्रों से उठना भी होगा। जो इज़्ज़त चाहता

الۡعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الۡعِزَّةُ جَمِيۡعًا ؕ اِلَيۡهِ يَصۡعَدُ الۡكَلِمُ

है तो अल्लाह ही के लिए है सारी इज़्ज़त। उसी की तरफ पाकीज़ा कलिमे

الطَّيِّبُ وَالۡعَمَلُ الصَّالِحُ يَرۡفَعُهٗ ؕ وَالَّذِيۡنَ يَمۡكُرُوۡنَ

चढ़ते हैं और नेक अमल उन को बुलन्द करते हैं। और जो बुरी तदबीरें

السَّيِّاٰتِ لَهُمۡ عَذَابٌ شَدِيۡدٌ ؕ وَمَكۡرُ اُولٰٓئِكَ هُوَ

करते हैं उन के लिए सख्त अज़ाब है। और उन का मक्र नाकाम

يَبُوۡرُ ۝١٠ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمۡ مِّنۡ تُرَابٍ ثُمَّ مِنۡ نُّطۡفَةٍ

होगा। और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया है मिट्टी से, फिर नुत्फे से,

ثُمَّ جَعَلَكُمۡ اَزۡوَاجًا ؕ وَمَا تَحۡمِلُ مِنۡ اُنۡثٰى وَلَا تَضَعُ

फिर तुम्हें जोड़े जोड़े बनाया। और कोई मादा हामिला नहीं होती और न जनती है

اِلَّا بِعِلۡمِهٖ ؕ وَمَا يُعَمَّرُ مِنۡ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنۡقَصُ

मगर अल्लाह के इल्म में होता है। और किसी उम्र वाले को उम्र नहीं दी जाती और न उस की उम्र में से कम

مِنۡ عُمُرِهٖۤ اِلَّا فِىۡ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيۡرٌ ۝١١

किया जाता है मगर वो लौहे महफ़ूज़ में है। और ये अल्लाह पर आसान है।

وَمَا يَسۡتَوِى الۡبَحۡرٰنِ ۖ هٰذَا عَذۡبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ

और दो समन्दर बराबर नहीं हैं। ये मीठा, प्यास बुझाता है, उस का पीना खुशगवार है,

وَهٰذَا مِلۡحٌ اُجَاجٌ ؕ وَمِنۡ كُلٍّ تَاۡكُلُوۡنَ لَحۡمًا طَرِيًّا

और ये नमकीन कड़वा है। और हर एक में से तुम खाते हो ताज़ा गोश्त

وَّ تَسۡتَخۡرِجُوۡنَ حِلۡيَةً تَلۡبَسُوۡنَهَا ۚ وَتَرَى الۡفُلۡكَ فِيۡهِ

और तुम निकालते हो ज़ेवर जिस को तुम पेहेनते हो। और आप कशती को देखोगे उस में

مَوَاخِرَ لِتَبۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِهٖ وَلَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ۝١٢

मौजों को फाड़ती हुई चलती हैं, ताके तुम अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो और ताके तुम शुक्र अदा करो।

يُوۡلِجُ الَّيۡلَ فِى النَّهَارِ وَ يُوۡلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيۡلِ ۙ وَ

वो रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है। और

سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ

उस ने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है। सब के सब चलते रहेंगे वक़्ते मुक़र्ररा तक के लिए।

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ

यही अल्लाह तुम्हारा रब है, उसी के लिए सल्तनत है। और जिन को तुम पुकारते हो

مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ﴿١٣﴾ اِنْ تَدْعُوْهُمْ

उस के सिवा वो खजूर की गुठली के ग़िलाफ के भी मालिक नहीं हैं। अगर तुम उन को पुकारो

لَا يَسْمَعُوْا دُعَآءَكُمْ ۚ وَلَوْ سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ؕ

तो वो तुम्हारी पुकार सुनते नहीं। और अगर वो सुनें भी तो तुम्हें जवाब नहीं दे सकेंगे।

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ ؕ وَلَا يُنَبِّئُكَ

और क़यामत के दिन वो तुम्हारे शिर्क का इन्कार करेंगे। और तुम्हें बाखबर की तरह कोई

مِثْلُ خَبِيْرٍ ﴿١٤﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ

खबर नहीं दे सकता। ऐ इन्सानो! तुम मोहताज हो

اِلَى اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿١٥﴾ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ

अल्लाह की तरफ़। और अल्लाह बेनियाज़ है, क़ाबिले तारीफ है। अगर वो चाहे तो तुम्हें हलाक कर दे

وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٦﴾ وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿١٧﴾

और नई मखलूक़ को ले आए। और ये अल्लाह पर कुछ मुशकिल नहीं।

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ

और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। और अगर कोई बोझ लदा हुवा उस के उठाने को

اِلٰى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ؕ

(किसी को) बुलाए तो कुछ बोझ भी उस में से उठाया नहीं जा सकता अगर्चे वो क़रीबी रिश्तेदार ही क्यूं न हो।

اِنَّمَا تُنْذِرُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَاَقَامُوا

आप तो सिर्फ उन को डराते हैं जो अपने रब से बेदेखे डरते हैं और नमाज़ क़ाइम

الصَّلٰوةَ ؕ وَمَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ ؕ

करते हैं। और जो तज़किया करेगा तो सिर्फ अपनी ही ज़ात के फ़ाइदे के लिए तज़किया करेगा।

وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿١٨﴾ وَمَا يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ﴿١٩﴾

और अल्लाह ही की तरफ़ लौटना है। और अन्धा और बीना बराबर नहीं हो सकते।

وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوۡرُ ۙ﴿۲۰﴾ وَلَا الظِّلُّ وَلَا الۡحَرُوۡرُ ۚ﴿۲۱﴾
और अन्धेरे और नूर बराबर नहीं हो सकते। और साया और धूप बराबर नहीं हो सकती।
وَمَا يَسۡتَوِى الۡاَحۡيَآءُ وَلَا الۡاَمۡوَاتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُسۡمِعُ
और ज़िन्दे और मुर्दे बराबर नहीं हो सकते। यक़ीनन अल्लाह सुनाते हैं
مَنۡ يَّشَآءُ ۚ وَمَاۤ اَنۡتَ بِمُسۡمِعٍ مَّنۡ فِى الۡقُبُوۡرِ ﴿۲۲﴾ اِنۡ اَنۡتَ
जिसे चाहते हैं। और आप उन को नहीं सुना सकते जो क़ब्रों में हैं। आप तो सिर्फ़
اِلَّا نَذِيۡرٌ ﴿۲۳﴾ اِنَّاۤ اَرۡسَلۡنٰكَ بِالۡحَـقِّ بَشِيۡرًا وَّ نَذِيۡرًا ؕ
डराने वाले हैं। हम ने आप को हक़ दे कर बशारत देने वाला, डराने वाला रसूल बना कर भेजा है।
وَاِنۡ مِّنۡ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيۡهَا نَذِيۡرٌ ﴿۲۴﴾ وَاِنۡ يُّكَذِّبُوۡكَ فَقَدۡ
और कोई उम्मत ऐसी नहीं जिस में डराने वाला न आया हो। और अगर ये आप को झुठलाएं तो उन
كَذَّبَ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ۚ جَآءَتۡهُمۡ رُسُلُهُمۡ بِالۡبَيِّنٰتِ
लोगों ने भी झुठलाया जो उन से पेहले थे। जिन के पास उन के पैग़म्बर रोशन मोअजिज़ात
وَبِالزُّبُرِ وَ بِالۡكِتٰبِ الۡمُنِيۡرِ ﴿۲۵﴾ ثُمَّ اَخَذۡتُ الَّذِيۡنَ
और लिखी हुई किताबें और रोशन किताब ले कर आए थे। फिर मैं ने काफिरों को
٣ ع ١٢ ١٥ كَفَرُوۡا فَكَيۡفَ كَانَ نَكِيۡرِ ۚ﴿۲۶﴾ اَلَمۡ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنۡزَلَ
पकड़ लिया, फिर मेरा अज़ाब कैसा था? क्या आप ने देखा नहीं के अल्लाह ने आसमान
مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخۡرَجۡنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخۡتَلِفًا
से पानी उतारा। फिर हम ने उस से फलों को निकाला जिन के रंग
اَلۡوَانُهَا ؕ وَمِنَ الۡجِبَالِ جُدَدٌ ۢ بِيۡضٌ وَّحُمۡرٌ مُّخۡتَلِفٌ
मुखतलिफ हैं। और पहाड़ों में सफेद और सुर्ख घाटियाँ हैं जिन के रंग
اَلۡوَانُهَا وَ غَرَابِيۡبُ سُوۡدٌ ﴿۲۷﴾ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ
मुखतलिफ होते हैं और कुछ गेहरे सियाह होते हैं। और इन्सानों में से और चौपाओं में से
وَالۡاَنۡعَامِ مُخۡتَلِفٌ اَلۡوَانُهٗ كَذٰلِكَ ؕ اِنَّمَا يَخۡشَى اللّٰهَ
और जानवरों में भी इसी तरह मुखतलिफ रंग के (पैदा किए)। अल्लाह से उस के बन्दों में से
مِنۡ عِبَادِهِ الۡعُلَمٰٓؤُا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيۡزٌ غَفُوۡرٌ ﴿۲۸﴾ اِنَّ
सिर्फ़ इल्म वाले डरते हैं। बेशक अल्लाह ज़बर्दस्त है, बख्शने वाला है। यक़ीनन

الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا
जो लोग अल्लाह की किताब की तिलावत करते हैं और नमाज़ क़ाइम करते हैं और खर्च करते हैं

مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً
उस में से जो हम ने उन्हें रोज़ी के तौर पर दिया है चुपके और अलानिया, वो उम्मीद रखते हैं ऐसी तिजारत की

لَّنْ تَبُوْرَ ﴿٢٩﴾ لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَ يَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ
जो बरबाद नहीं होगी। ताके अल्लाह उन्हें उन के सवाब दे और उन्हें अपने फ़ज़्ल से मज़ीद दे।

اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿٣٠﴾ وَالَّذِيْۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ
यक़ीनन वो बख्शने वाला, क़दरदान है। और वो किताब जो हम ने आप की तरफ

مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
वही की वो हक़ है, सच्चा बतलाने वाली है उन किताबों को जो उस से पेहले थीं। यक़ीनन अल्लाह

بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٣١﴾ ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ
अपने बन्दों से बाखबर है, वो देख रहा है। फिर हम ने किताब का वारिस बनाया उन को जिन्हें

اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ
हम ने मुन्तखब किया हमारे बन्दों में से। फिर उन में से कोई तो अपने ऊपर ज़ुल्म करने वाला है। और उन में से

مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ
कोई मयानारव है। और उन में से कोई नेकियों में सबक़त करने वाला है अल्लाह के हुक्म से। ये

هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٣٢﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا
बड़ा फ़ज़्ल है। जन्नाते अद्न में वो दाखिल होंगे,

يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ
वहाँ उन्हें सौने के कंगन और मोती पेहनाए जाएंगे। और उन का लिबास

فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿٣٣﴾ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْۤ اَذْهَبَ عَنَّا
उन में रेशम का होगा। और वो कहेंगे के तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने हम से ग़म

الْحَزَنَ ؕ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ ﴿٣٤﴾ الَّذِيْۤ اَحَلَّنَا
दूर कर दिया। यक़ीनन हमारा रब बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, क़दरदान है। वो अल्लाह जिस ने हमें

دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا
हमेशा के घर में अपने फ़ज़्ल से उतारा। जिस में न हमें रंज पहोंचेगा और न

يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ
थकावट पहोंचेगी। और वो लोग जो काफिर हैं उन के लिए जहन्नम की आग है।

لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ
उन के मुतअल्लिक़ फैसला नहीं होगा के वो मर जाएं, और न उन से आग का अज़ाब हलका

مِّنْ عَذَابِهَا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ ﴿٣٦﴾ ۚ وَهُمْ يَصْطَرِخُوْنَ
किया जाएगा। इसी तरह हम हर नाशुकरे को सज़ा देंगे। और वो उस में चीख

فِيْهَا ۚ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا
रहे होंगे। ऐ हमारे रब! तू हमें निकाल के हम नेक अमल करें उस के अलावा जो हम

نَعْمَلُ ؕ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَ
करते थे। (तो कहा जाएगा) क्या हम ने तुम्हें उमरें नहीं दी थीं जिस में नसीहत हासिल कर सकता था जो नसीहत

٤ ع ١١ ١٧ جَآءَكُمُ النَّذِيْرُ ؕ فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿٣٧﴾
हासिल करता और तुम्हारे पास डराने वाला भी आया था? फिर तुम चखो। फिर ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

اِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ
यक़ीनन अल्लाह आसमान और ज़मीन की पोशीदा चीज़ें जानने वाला है। यक़ीनन उसे दिलों

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٣٨﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ
के हाल का भी इल्म है। उस ने तुम्हें ज़मीन में जानशीन

فِي الْاَرْضِ ؕ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ؕ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ
बनाया। फिर जो कुफ्र करेगा, तो उसी पर उस के कुफ्र का वबाल पड़ेगा। और काफिरों का कुफ्र उन के

كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ
रब के यहाँ गुस्से ही को बढ़ाता है। और काफिरों को उन का कुफ्र

كُفْرُهُمْ اِلَّا خَسَارًا ﴿٣٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيْنَ
खसारे ही में बढ़ाता है। आप फ़रमा दीजिए क्या तुम ने देखा अपने शुरका को अल्लाह

تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا
के सिवा जिन को तुम पुकारते हो? मुझे दिखाओ उन्हों ने क्या पैदा किया

مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۚ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا
ज़मीन में से या उन की शिराकत है आसमानों में? या हम ने उन्हें किताब दी है

فَهُمْ عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ
के वो उस की वजह से रोशन रास्ते पर हैं? बल्के ये ज़ालिम उन में से एक दूसरे से वादा

بَعْضًا اِلَّا غُرُوْرًا ﴿٤٠﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
नहीं करते मगर धोके ही का। बेशक अल्लाह आसमानों और ज़मीन को गिरने से थामे

اَنْ تَزُوْلَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَآ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ
हुए है। और अगर वो गिर जाएं तो उन्हें अल्लाह के बाद कौन

مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿٤١﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ
थाम सकता है? यक़ीनन वो हिल्म वाला, बहोत ज़्यादा बख्शने वाला है। और ये अल्लाह की क़स्में खाते थे पक्की

اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ اِحْدَى
क़स्में के अगर उन के पास डराने वाला आएगा तो ज़रूर सारी उम्मतों में सब से ज़्यादा हिदायत वाले बन

الْاُمَمِ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ﴿٤٢﴾
जाएंगे। लेकिन जब उन के पास डराने वाला आया तो उन की नफ़रत और बढ़ी।

اِۨسْتِكْبَارًا فِى الْاَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ؕ وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ
ज़मीन में तकब्बुर करने और बुरी तदबीरें करने की बिना पर। और बुरा मक्र उस के करने

السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ ؕ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ
वालों ही को हलाक करता है। क्या फिर पेहले लोगों के दस्तूर के वो मुन्तज़िर हैं?

فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ
फिर आप अल्लाह के दस्तूर में कोई तबदीली हरगिज़ नहीं पाओगे। और अल्लाह के दस्तूर में तग़य्युर हरगिज़

تَحْوِيْلًا ﴿٤٣﴾ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ
न पाओगे। क्या वो ज़मीन में चले फिरे नहीं के देखते के उन

كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ
लोगों का अन्जाम कैसा हुवा जो उन से पेहले थे और उन से ज़्यादा कूव्वत

قُوَّةً ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَيْءٍ فِى السَّمٰوٰتِ
वाले थे? और अल्लाह ऐसा नहीं है के उसे कोई चीज़ आजिज़ कर सके आसमानों में

وَلَا فِى الْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ﴿٤٤﴾ وَلَوْ يُؤَاخِذُ
और न ज़मीन में। यक़ीनन वो इल्म वाला, कुदरत वाला है। और अगर अल्लाह

اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا

इन्सानों को पकड़े उन के आमाल की वजह से तो ज़मीन की पुश्त पर किसी जानदार को

مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ

न छोड़े, लेकिन अल्लाह उन्हें मुहलत दे रहा है एक वक़्ते मुक़र्ररा तक।

٥ ع ٨ ١٧ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا ﴿٤٥﴾

फिर जब उन का आखिरी वक़्त आ जाएगा तो यक़ीनन अल्लाह अपने बन्दों को खूब देख रहा है।

اٰيَاتُهَا ٨٣ (٣٦) سُوْرَةُ يٰسٓ مَكِّيَّةٌ (٤١) رُكُوْعَاتُهَا ٥

उस में ८३ आयतें हैं सूरह यासीन मक्का में नाज़िल हुई और ५ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يٰسٓ ﴿١﴾ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣﴾

या सीन। हिक्मत वाले कुरआन की क़सम। यक़ीनन आप भेजे हुए पैग़म्बरों में से हैं।

عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤﴾ تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ﴿٥﴾ لِتُنْذِرَ قَوْمًا

सीधे रास्ते पर हैं। ये कुरआन ज़बर्दस्त रहमत वाले अल्लाह की तरफ़ से उतारा गया है। ताके आप डराएं ऐसी क़ौम को

مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٦﴾ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ

जिन के बाप दादा को नहीं डराया गया है, इस लिए वो ग़ाफिल हैं। यक़ीनन उन में से अक्सर पर क़ौले हक़

عَلٰٓى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٧﴾ اِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا

साबित हो गया के वो ईमान नहीं लाएंगे। यक़ीनन हम ने उन की गर्दनों में तौक़ रख दिए हैं,

فَهِيَ اِلَى الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ﴿٨﴾ وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ

फिर वो ठोड़ियों तक पहोंच गए हैं और उन के सर ऊँचे हो रहे हैं। और हम ने उन के आगे

اَيْدِيْهِمْ سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ

दीवार बना दी है और उन के पीछे दीवार बना दी है, फिर हम ने उन को ढांप लिया है, इस लिए वो

لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٩﴾ وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ

देख नहीं सकते। और उन पर बराबर है चाहे आप उन्हें डराएं या न डराएं,

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠﴾ اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمٰنَ

वो ईमान नहीं लाएंगे। आप उसी को डरा सकते हैं जो इस नसीहत का इत्तिबा करे और रहमान से बेदेखे

بِالْغَيْبِ ۚ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّاَجْرٍ كَرِيْمٍ ۝١١ اِنَّا نَحْنُ نُحْيِ

डरे। फिर आप उसे बशारत दीजिए मग़फिरत और इज़्ज़त वाले सवाब की। हम ही मुर्दों को ज़िन्दा करेंगे

الْمَوْتٰى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَاٰثَارَهُمْ ۛ وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ

और हम लिख रहे हैं उन के आगे भेजे हुए आमाल और उन के निशानाते क़दम। और हर चीज़ हम ने महफ़ूज़ कर रखी है

فِيْٓ اِمَامٍ مُّبِيْنٍ ۝١٢ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ

लौहे महफ़ूज़ में। और आप उन के लिए मिसाल बयान कीजिए एक बस्ती वालों की,

اِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ۝١٣ اِذْ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ

जब उन के पास भेजे हुए आदमी आए। जब हम ने उन की तरफ दो रसूल भेजे, तो उन्हों ने उन को

فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا اِنَّآ اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ۝١٤

झुठलाया, फिर हम ने तीसरे को तक़्वियत के लिए भेजा, फिर उन तीनों ने कहा हम तुम्हारी तरफ भेजे गए हैं।

قَالُوْا مَآ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَمَآ اَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ

वो बोले के तुम नहीं हो मगर हम जैसे एक इन्सान और रहमान तआला ने कुछ भी

مِنْ شَيْءٍ ۙ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَكْذِبُوْنَ ۝١٥ قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ

नहीं उतारा। तुम तो सिर्फ़ झूठ बोलते हो। उन्हों ने कहा के हमारा रब जानता है के

اِنَّآ اِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ ۝١٦ وَمَا عَلَيْنَآ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝١٧

बेशक हम तुम्हारी तरफ भेजे गए हैं। और हमारे ज़िम्मे तो सिर्फ़ साफ़ साफ़ पहोंचा देना है।

قَالُوْٓا اِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ

वो बोले के हम तुम्हें मन्हूस समझते हैं। अगर तुम बाज़ नहीं आओगे तो हम तुम्हें रज्म कर देंगे

وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝١٨ قَالُوْا طَآئِرُكُمْ مَّعَكُمْ ۭ

और तुम्हें हमारी तरफ से दर्दनाक सज़ा मिलेगी। तो वो तीनों केहने लगे तुम्हारी नहूसत तुम्हारे साथ है।

اَئِنْ ذُكِّرْتُمْ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ۝١٩ وَجَآءَ

क्या अगर्चे तुम्हें नसीहत की जाए तब भी? बल्के तुम ऐसी क़ौम हो जो हद से तजावुज़ करते हो। और शेहर के किनारे

مِنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ۝٢٠

से एक आदमी आया दौड़ता हुवा, उस ने कहा के ऐ मेरी क़ौम! तुम उन रसूलों का इत्तिबा कर लो।

اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْــَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝٢١

तुम उन का इत्तिबा कर लो जो तुम से बदला नहीं मांगते और जो हिदायतयाफ्ता हैं।